TEACHERS OF BIHAR

Reg. No. BR/2025/0487469

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

जुलाई 2026 | अंक 23

ई-पत्रिका तक पहुँचने हेतु QR कोड को स्कैन करें

मासिक कविता संग्रह

पद्यपंकज काव्य संग्रह

अस्वीकरण

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से नि:शुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुन: प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

संपादक मंडल

संरक्षक

डॉ० चन्दन श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (शिक्षा), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

संपादक

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

सह-संपादक

मधु कुमारी
प्रा०वि०बाँधकट्टा
आजमनगर कटिहार

अमितेष कुमार
राजकीय बुनियादी विद्यालय रेपुरा प्रखंड सकरा जिला मुजफ्फरपुर बिहार

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

मार्गदर्शक

शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
नारायणपुर, बिक्रम, पटना

संरक्षक का संदेश

प्रिय साथियों,

बिहार के शिक्षकों द्वारा सृजित मासिक काव्य-संग्रह 'पद्यपंकज' का प्रत्येक अंक साहित्यिक संवेदनाओं, सृजनात्मक चिंतन और मानवीय मूल्यों का अनुपम संगम प्रस्तुत करता है। इसमें प्रकाशित प्रत्येक रचना केवल शब्दों का संयोजन मात्र नही, बल्कि रचनाकारों के अंतर्मन की अनुभूतियों, जीवन-दृष्टि, सामाजिक सरोकारों तथा सांस्कृतिक चेतना का सजीव प्रतिबिंब है। यह संग्रह न केवल सृजनशील शिक्षकों की साहित्यिक प्रतिभा को अभिव्यक्ति प्रदान करता है, बल्कि साहित्य के माध्यम से समाज में सकारात्मक विचारों और संवेदनशीलता का भी प्रसार करता है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि 'पद्यपंकज' प्रत्येक अंक के साथ निरंतर नए रचनाकारों को अपने साथ जोड़ते हुए विविध विषयों पर भावपूर्ण, मौलिक एवं उत्कृष्ट काव्य-रचनाओं का प्रकाशन कर रहा है। यह निरंतरता इस बात का प्रमाण है कि शिक्षकों के भीतर निहित साहित्य-साधना की ज्योति आज भी पूर्णसमर्पण और ऊर्जा के साथ प्रज्वलित है।

निस्संदेह, ये रचनाएँ पाठकों के हृदय में गहन संवेदनाओं का संचार करेंगी और उन्हें आत्मिक संतोष का अनुभव कराएँगी।

मैं इस अंक में अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति देने वाले सभी शिक्षक-कवियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। साथ ही, इस कृति के प्रकाशन में समर्पित भाव से योगदान देने वाले संपादकमंडल, सहयोगियों तथा समस्त पाठकों के प्रति भी अपनी हार्दिक शुभेच्छाएँ व्यक्त करता हूँ।

मेरी मंगलकामना है कि 'पद्यपंकज' इसी प्रकार साहित्य-साधना के इस पावन अभियान को निरंतर आगे बढ़ाता रहे, नई प्रतिभाओं को मंच प्रदान करता रहे तथा अपनी सृजनात्मक यात्रा के माध्यम से समाज में संवेदनशीलता, मानवीय मूल्यों और साहित्यिक चेतना का प्रकाश फैलाता रहे।

सभी रचनाकारों, पाठकों एवं साहित्य-प्रेमियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

सादर,

चन्दन श्रीवास्तव

डॉ० चन्दन श्रीवास्तव

सहायक आचार्य (शिक्षा),
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है । यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है, जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

13/04/25

डॉ. रश्मि प्रभा
पूर्व संयुक्त निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं "पद्यपंकज" पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ. स्नेहाशीष दास

विभागाध्यक्ष,
विद्यालयी शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

संपादकीय

साथियों नमस्कार,

पद्य केवल छंदों में बँधे शब्दों का संसार नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर उठने वाली संवेदनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है। कभी कोई कविता मन को छू जाती है, कभी कोई गीत स्मृतियों के झरोखे खोल देता है, कोई कहानी जीवन का आईना बन जाती है और कोई आलेख हमें किसी नए विचार से परिचित कराता है। साहित्य की यही विविधता उसे जीवन के और भी करीब ले आती है।

'पद्यपंकज' का यह जुलाई अंक इसी विविधता को अपने भीतर समेटे हुए आपके सामने उपस्थित है। इस अंक में अलग-अलग भावभूमि, विषय-वस्तु और शिल्प की रचनाएँ शामिल हैं। कहीं प्रकृति की सुंदरता और बारिश की रिमझिम है, कहीं रिश्तों की गर्माहट, कहीं जीवन के संघर्ष और अनुभव हैं, तो कहीं समाज, शिक्षा, संस्कृति और मानवीय मूल्यों से जुड़े विचार। इन रचनाओं की अलग-अलग रंगत मिलकर साहित्य का एक सुंदर इंद्रधनुष रचती है।

जब शिक्षकों की लेखनी साहित्य का माध्यम बनती है, तो उसमें अनुभव की एक अलग गहराई जुड़ जाती है। विद्यालय, बच्चे, समाज, प्रकृति और जीवन से प्रतिदिन मिलने वाले अनुभव शब्दों में ढलकर केवल रचना नहीं रहते, वे हमारे समय का दस्तावेज भी बन जाते हैं। शिक्षक का साहित्य सृजन इस अर्थ में शिक्षा की कक्षा को जीवन की कक्षा से जोड़ने का कार्य करता है।

आइए, शब्दों की इस यात्रा में हमारे साथ चलें। रचनाओं को केवल पढ़ें नहीं, उन्हें महसूस करें, उनके भावों से जुड़ें और अपने भीतर उठने वाली अनुभूतियों को भी शब्द देने का प्रयास करें। क्योंकि साहित्य वहीं जीवित रहता है, जहाँ शब्द पाठक के मन में उतरकर विचार और संवेदना को जन्म देते हैं।

आपकी प्रतिक्रिया के इंतजार में,

अनुपमा प्रियदर्शिनी

राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय दूधहन ,

रघुनाथपुर, सीवान

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचनाकार	रचना	पृष्ठ संख्या
1.	ज्ञानी ककाहरा	संतोष कुमार	8
2.	सपनों की उड़ान	आशीष अम्बर	9
3.	स्वच्छता जागरुकता	कार्तिक कुमार	10
4.	मेरा किसान	संजीत कुमार निगम	11
5.	पावस आया	ब्यूटी कुमारी	12
6.	गुरु पद वंदन	रामकिशोर पाठक	13
7.	शिक्षा का महत्व	मृत्युंजय कुमार	14
8.	हम दिखला देंगे जीकर	डॉ. स्वराक्षी स्वरा	15
9.	समय	रत्ना प्रिया	16
10.	एक आह	स्मिता ठाकुर	17
11.	विजय पताका	बिन्दु अग्रवाल	18
12.	मंजिल की तलाश	मुन्नी कुमारी	19
13.	डर	रुचिका	20
14.	पर्यटन ए बिहार	रवि कुमार	21

TEACHERS OF BIHAR THE CHANGE MAKERS

ज्ञानी ककहरा

क से कबूतर हम पढ़ते हैं
ख से खरगोश है, उजला – उजला

ग से गमला में पौधे लगाना
घ से घंटी जोर से बजाना
ड़ करता आराम
क, ख, ग, घ बच्चों में भर देता है, "ज्ञान" ।
च से चरखी गोल- गोल घूमता
छ से छतरी आसमान चूमता
ज से जंगल जीवों की जान
झ से झंडा तिरंगा भारत की शान

च, छ , ज, झ बच्चों में भर देता है "ज्ञान" ।
ट से टमाटर रेस लगता
ठ से ठग का बैंड बजाता
ड से डमरू करता नाच
ढ़ से ढोलक देता आवाज
ण करता कुछ कुछ काम
ट , ठ, ड , ढ बच्चों में भर देता है, "ज्ञान" ।

त से तरंग पानी में उठता
थ से थरमस का पानी ठंडा
द से दवात की स्याही सुखी
ध से धनुष है शिकार की भूखी
न से नल प्यासे की जान
त, थ, द, ध बच्चों में भर देता है, "ज्ञान"।
प पतंग आसमान में उड़ती,
फ से फल गर्मी में सड़ती,
ब से बकरी खाती घास,
भ से भालू दिखाएं नाच,
म से मछली का जल है जान,
प,फ,ब,भ बच्चों में भर देता है, "ज्ञान"।
य से यज्ञ पंडित करवाता,
र से रथ सारथी चलाता,
ल से लट्टू नाचे ऐसे,
व से वर्षा तेजी से बरसे,
श से शलजम का सब्जी प्यारे,
ष से षट्कोण का छः किनारे,
स से सपेरा बीन बजाता,
ह से हल किसान चलाता,
क्ष से क्षत्रिय रक्षा करता,
त्र से त्रिशूल लंबा दिखता,
ज्ञ, से ज्ञानी देता ज्ञान,
य,र,ल,व बच्चों में भर देता है, "ज्ञान" ।

संतोष कुमार,
प्राथमिक विद्यालय बेदौल गोट ,
प्रखंड – पुपरी ,
जिला- सीतामढ़ी

सपनों की उड़ान

हम तो आगे बढ़ चलें हैं,
सपनों की एक लिए उड़ान।

लक्ष्य हमारा हम साध लिए हैं,
राह में आए आँधी या तूफान।

हमारी कश्ती के हम हीं है कप्तान,
थाम ली हाथों में अपनी कमान।

हम तो नही हैं इतने भी गुणवान,
पर ठाना है बनानी , खुद की पहचान।

मेहनत मेरी जारी रहेगी,
यही मेरा खुद से है फरमान।

जग ने भी उन्हीं को है पहचाना,
जो दूजे के लिए हो गए कुर्बान।

हम तो आगे बढ़ चले हैं,
सपनों की एक लिए उड़ान।

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी , जिला – दरभंगा

स्वच्छता जागरूकता

स्वच्छ रहेंगे, स्वस्थ रहेंगे।
मिलकर आगे बढ़ते रहेंगे।
घर-आँगन साफ़ बनाएँ।
कूड़ा कभी नहीं फैलाएँ।
विद्यालय सुंदर चमकाएँ।
सब स्वच्छता अपनाएँ।
हाथों को साबुन से धोएँ।
रोगों को हम दूर भगाएँ।
साफ़ हवा में खेलें-कूदें।
खुशियों के गीत सभी गाएँ।
पेड़ लगाएँ, जल बचाएँ।
धरती माँ का मान बढ़ाएँ।
स्वच्छ सड़कें, सुंदर गाँव।
यही हमारा प्यारा ठाँव।
मिल-जुलकर यह काम करेंगे।
भारत का नाम रोशन करेंगे।
स्वच्छता सबसे बड़ी कमाई।
यही है सच्ची अच्छाई।

कहते हैं कार्तिक कुमार, स्वच्छ भारत बने हमारा संसार।
टीचर्स ऑफ बिहार का बैगलेस डे पैगाम, सीखें, सृजन करें, बढ़ाएँ भारत का नाम।

कार्तिक कुमार
B.P.Ed., M.A. in Yoga
जिला शिक्षा पुरस्कार प्राप्त शिक्षक
मध्य विद्यालय कटरमाला,
गोरौल, वैशाली

मेरा किसान

जब मंडराने लगे आसमान में बादल काले-काले,
कंधों पर कुदाल लिए खेतों की राह चले मतवाले।

जब बरसने लगीं बूँदें झम-झम,
बिछड़ी उखाड़ने लगे किसान हरदम।

बारिश की बूँदें मोतियों-सी चमकती हैं,
धरती की सूनी गोद में आशा बन बरसती हैं।

हर बूँद का मोल किसान ही पहचानता है,
अपने पसीने से उसका पूरा हिसाब चुकाता है।

धरती माँ की गोद में वह अपना श्रम, भाग्य के भरोसे बोता है,
किसान ही है जो सब जानकर भी भविष्य का सपना संजोता है।

बाढ़ भी आएगी, सुखाड़ भी आएगा,
प्रकृति का हर प्रकोप उसे आज़माएगा।

फिर भी अपना श्रम, समय और पूँजी खेतों में लगा आता है,
उम्मीद के भरोसे किसान अपना सर्वस्व निछावर कर जाता है।

उसी की मेहनत से लहलहाते हैं खेत-खलिहान,
महकती है हर थाली की रोटी, मुस्कुराता है अपना हिंदुस्तान।

हर घर की रोटी में बसता है उसका सम्मान,
सचमुच धरती का भगवान है मेरा किसान।

संजीत कुमार निगम
प्राथमिक विद्यालय
आदिवासी टोला मधुरा
फारबिसगंज अररिया
बिहार

पावस आया

अंबर में जलधर,
अवनी पर पावस आया।
बह रहा शीतल समीर,
कॉंप रही है काया।
पयोधर की गर्जना,
दामिनी का दमक,
मार्तंड सा दीप्तिमान।
धरा पर झर रहा जलबिंदु,
चहुंओर पानी – पानी।
पावस आया पावस आया,
अवनी का प्यास बुझाया।
कृषक को हर्षाया,
धरा पर हरियाली छाया।
दादुर का टर्र- टर्र,
कर्ण में गुंजायमान।
गगन में देख बदरिया,
छम -छम नाचे मोर।
सरिता सर निर्मल जलधार,
वसुंधरा पर जीवन का आधार।
सबके मन को हर्षाया,
भूतल पर पावस आया।

ब्यूटी कुमारी
दलसिंहसराय
समस्तीपुर

गुरु पद वंदन

वेद पुराण सभी कहते।
ज्ञान प्रकाश वही गहते।।
जो गुरु वंदन है करते।
शीश सदा पग में धरते।।०१
पुण्य प्रसून सदा खिलता।
मार्ग निदान उसे मिलता।।
ईश झुकें पग में जिसके।
चंदन है रज में जिसके।।०२।।
दूर करे असमंजस जो।
नूर भरे उर अंतर जो।।
पार करे गुरु ही भव को।
तेज अतुल्य ढके रव को।।०३।।

राम किशोर पाठक
सियारामपुर, पालीगंज,
पटना, बिहार।

शिक्षा का महत्व

हम शिक्षक हैं, हाँ! हम शिक्षक हैं,
बच्चों के सच्चे मार्गदर्शक हैं।
ज्ञान की ज्योति से राह दिखाते,
स्नेह से उनका हाथ थामे आगे बढ़ाते।
पढ़-लिखकर ये बच्चे बनेंगे महान,
माता-पिता का बढ़ाएँगे सम्मान।
देश-दुनिया में अपना नाम करेंगे,
अपने गुरुजनों का सदैव मान करेंगे।
शिक्षा जीवन का अनमोल उपहार है,
यही सफलता का सच्चा आधार है।
शिक्षा पाकर कभी न करना अभिमान,
विनम्रता ही बनाती है इंसान महान।
आओ प्यारे बच्चों, आओ मिलकर संकल्प करें,
ज्ञान, संस्कार और सत्य के पथ पर सतत आगे बढ़ें।
तुम शिक्षा के सच्चे सिपाही बनो,
अपने माता-पिता, गुरुजनों और देश का नाम ऊँचा करो।

मृत्युंजय कुमार
NPS खुटौना यादव टोला
पताही,पूर्वी चंपारण

हम दिखला देंगे जीकर के

कुछ बूंद गिरे हैं आंसू के
कुछ दावानल भी फूट गया
ये कैसी ठोकर खाई है
सपना आँखों का टूट गया
हम फिर भी हँसते जायेंगे -2
टूटे दिल को सी कर के
सागर की मौजों से पूछो
कितनी प्यासे बांकी है
बाधाओं से पार निकलती
नदियों की जो झांकी है
जीवन रस का पान करेंगे-2
हम गरलों को पी कर के
सुख-दुख जीवन के रंगों की
अनमिट सखी कहानी है
श्वेत-श्याम, दिवा-रजनी सी
चलती ये मस्तानी है
स्वरा प्रेम की राह चलेंगे -2
हम तो कैसे भी कर के

डॉ स्वराक्षी स्वरा
खगड़िया, बिहार

समय

आनंद हो या कठिन समय, हर क्षण बदलता जाता है,
सुख-दुःख जीवन में आते हैं, समय निकलता जाता है ।

बचपन की फुलवारी आती, घर-आँगन महकाती है,
सुकोमल मन की कुसुम कली, नूतन दुष्टि विकसाती है,
स्नेह-छाँव में मातु-पिता के, शिशु हर पल मुसकाता है,
व्यवहारिकता, नैतिकता के, साँचे में ढल पाता है,
दिनकर बन प्रकाश की भाँति विश्व-पटल पर छाता है।
आनंद हो या कठिन समय, हर क्षण बदलता जाता है।

जीवन का अगला पड़ाव नवयौवन लेकर आता है,
उत्साह, स्फूर्ति, मन-प्राण को, ऊर्जा से भर जाता है,
सही दिशा में समुचित परिश्रम, मंजिल तक पहुँचाती है,
कठिन समय में संबल देकर, लड़ना हमें सिखाती है,
दृढ़ मनोबल, साहस संग ले, मनुज सफलता पाता है।
आनंद हो या कठिन समय, हर क्षण बदलता जाता है।

जीवन के अनुभवों का संचय, वृद्ध् काल को होता है,
नई पीढ़ी को राह दिखाने, जो उम्र भर सँजोता है,
सच्चे कर्मो के संचित फल ही, नाम –यश दे पाते हैं,
झूठ-फरेब-कपट से दूरी, अच्छे दिन दिखलाते हैं,
परमार्थ के पथ पर मानव, दीप-सा जलता जाता है।
आनंद हो या कठिन समय, हर क्षण बदलता जाता है।

सद्कर्म की महत्ता निराली, मृत्यु को अमरत्व देती है,
यश-कीर्ति के फूल बिछाकर, शूल न चुभने देती है,
अच्छे व बूरे कर्मो का जो, लेखा-जोखा रखते हैं,
आदर के हैं पात्र हमेशा, सदा मधुर फल चखते हैं,
श्रेष्ठ कर्मो के मलय पवन से, युग महकता जाता है।
आनंद हो या कठिन समय, हर क्षण बदलता जाता है।

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय
माधोपुर
चंडी ,नालंदा

एक आह

मन ने चाहा बस इतना,
कोई अपना इतने पास रहे।
दो मीठे से बोल कहे,
थोड़ा-सा विश्वास रहे।

लेकिन सूनी राहों ने,
हर उम्मीद छुपा ली है..
अंतर्मन की बातों ने,
कैसी ये सोच बना ली है

जिसको अपना समझ लिया,
वो भी चुप-सा रहता है।
मेरे मन का हर मौसम,
बिन बारिश ही बहता है।

शिकवा अब करते भी क्या,
सब किस्मत की बात सही।
फिर भी दिल ये कहता है—
हो सकती फिर से बात नई

टूटे सपनों की खुशबू,
अब भी मन में रहती है।
एक छोटी-सी चाह मगर,
हर दिन चुपके से कहती है

काश कि सबकुछ फिर से
पहले जैसा हो जाये
वो अँधेरे ख्वाब भयानक
चुपके से फिर खो जाय...

स्मिता ठाकुर
उत्क्रमित उच्च
माध्यमिक विद्यालय
कर्णपुर, सुपौल

विजय पताका

मेहनत करने वालों को
मिलती मंज़िल की राहें।
मंज़िल स्वागत-गान करे,
फैलाकर अपनी बाँहें।

जिसने अपना बना पसीना,
लहू बहाया होगा,
उसने बंजर धरती पर भी,
फूल खिलाया होगा।

जिसने लोगों के तानों की
परवाह कभी न की हो,
जिसने खुद के ही दम पर
परवाज़ हमेशा की हो।

जिसके पास साहस और श्रम हो,
मंज़िल उसको अपनाती है।
विजय-पताका सदा हाथ में ,
उसके लहराती है।

बिंदु अग्रवाल
शिक्षिका मध्य
विद्यालय गलगलिया
किशनगंज बिहार

मंजिल की तलाश

मंजिल की तलाश हैं,
सपनो की आश है।
राह भी कितनी कठिन है,
फिर भी, मन में विश्वास है।
समय ने मुझे सिखाया,
धैर्य सबसे बड़ा दमदार है।
जो हारकर भी मुस्कुराता है,

वही असली जीत का हकदार है।
मंजिल कितनी भी दूर हो,
थकना मुझे मंजूर नही।
पर्वत कितना भी ऊँचा हो,
डरना मुझे मंजूर नहीं है।
किसी ने कहा- "रुक जाओ अब",
मैंने कहा – "सफर अभी बाकी है"।

हर गिरना मुझे सिखाया,
जीत का असर अभी बाकी हैं।
इसलिए ऐ मेरे मन, तू थकना नहीं,
हालातों से कभी डरना नहीं।
मंजिल उसी को मिलती हैं,
जो सपनों की राह से मुड़ता नहीं।

मुन्नी कुमारी
प्राथमिक विद्यालय
मोहनपुर मुशहरी
प्रखण्ड- झंझारपुर,
मधुबनी

डर

अपने ही मन में पनपते कुछ ख़्याल,
कुछ परिस्थितियां जन्म लेती,
औऱ जन्म लेते कुछ विचार
थाम लेते हमारे बढ़ते कदमों को
और रोक देते हर बार
कोई अनहोनी की आशंका
डर ये कैसा उठता हर बार।

तमाम उजालों के बीच
अँधेरा हावी होता जाता
रास्ते भी पथरीले लगते चुभते हर बार
घुटन बढ़ती रहती मन के अंदर
बाहर के शोर पर हावी होता
मन का शोर
नकारात्मकता की घनी दीवारें ये
डर से मजबूत होती हर बार।

डर से जीतने के लिए कोशिश
करनी होगी स्वयं ही
अँधेरों में भी राह अपनी बनाकर
पथरीले रास्ते को पार करना होगा।
नियति को स्वीकार कर चलना होगा
घुटन कम होगी फिर देखना
डर का बादल छँटेगा फिर इस बार।

रूचिका
राजकीय प्राथमिक
विद्यालय कुरमौली गुठनी
सिवान बिहार

पर्यटन – ए – बिहार

हाँ मैं बिहार हूँ पर्यटनों का भरमार हूँ,
इतिहासों की पुकार हूँ धर्मों का प्रयाग हूँ।
माता सीता की अवतरण का गवाह हूँ,
जरासंध की विशाल मगध का मैं ही प्रमाण हूँ।

चलो सभी मिल कर करें बिहार पर्यटन का काम,
पधारो गया जी धाम यहाँ पद चिन्ह हैं हरी के नाम
जिस नदी को दिया जानकी ने उसकी पहचान,
उसी फाल्गु नदी तट पर होता है प्रसिद्ध पिंडदान

बेतिया बाघ अभ्यारण,काकोलत का जल प्रपात,
ठंडक देता भीखनाठोढी यहाँ की प्रकृति हैं पर्याप्त
लीची, आम और मखाना होते हैं विदेशों में निर्यात,
यहाँ की रमणीय स्थल को कोई न दे सकेगा मात

देखो तुम शेरशाह का मकबरा, मनेर की दरगाह,
सासाराम की पहाड़ी देख बच जाएगी न कोई चाह
बुद्ध से उपजा बोधि वृक्ष सिखाती है हमें नयी राह,
घूमो ज्ञान का खंडहर नालंदा जिसे दिया था ढाह

गंगा घाट, तारामंडल, चिड़ियाघर भी कभी जाओ,
चलो ज्ञान की खान दिमाग में तुम भी अब बनाओ
राजगीर ग्लास ब्रिज, जंगल सफारी करने आओ
यहाँ का प्रसिद्ध सिलाओ खाजा सबको खिलाओ

हाँ मैं बिहार हूँ पर्यटनों का भरमार हूँ,
इतिहासों की पुकार हूँ धर्मों का प्रयाग हूँ।
माता सीता की अवतरण का गवाह हूँ,
जारसंध की विशाल मगध का मैं ही प्रमाण हूँ।
हाँ मैं पर्यटन – ए – बिहार हूँ ।।

शिक्षक – रवि कुमार
विद्यालय – कन्या उ० म० वि०, मसाढ़ (उदवंतनगर, भोजपुर)

पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

Reg. No. BR/2025/0487469

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े |

writers.teachersofbihar@gmail.com
padyapankaj.teachersofbihar.org
+91 7250818080 | +91 9650233010

पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें